

**घोंचा** पुं. (देश.) गोद, गुच्छा, स्तवक, वह बैल जिसके सींग मुड़कर कान से जा लगे हों।

**घोंची स्त्री.** (देश.) वह गाय जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों।

**घोंचू** वि. (देश.) मूर्ख।

**घोंटना** स.क्रि. (देश.) गला इस प्रकार दबाना कि दम रुक जाए, गला मरोड़ना।

**घोंटा** पुं. (तत्.) सुपारी।

**घोंटू** वि. (देश.) घोंटनेवाला, (गला), (दम) घोंटू 2. रटनेवाला, रट्टू

**घोंपना** स.क्रि. (देश.) भोंकना, चुभाना, धँसाना 2. बुरी तरह सीना, गाँठना।

**घोंसला** पुं. (देश.) वृक्ष, पुरानी दीवार के मोखे आदि पर खर, पत्ते, घास-फूस और तिनके आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं, नीड़, खोता।

**घोखना** स.क्रि. (तद्.) धारण करने के लिए बार-बार पढ़ना, स्मरण रखने के लिए बार-बार पढ़ना, रटना, घोटना।

**घोखवाना** स.क्रि. (देश.) बार-बार कहलाना, याद करना, रटवाना।

**घोघा** पुं. (देश.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो चने की फसल को हानि पहुँचाता है। यह कीड़ा सरदी से पैदा होता है और चने की घँटियों के अंदर घुसकर दाने खा जाता है, जिससे खाली घँटी रह जाती है।

**घोटक** पुं. (तत्.) घोड़ा, अश्व।

**घोटकारि** पुं. (तत्.) घोड़े का शत्रु, भैंसा, महिष।

**घोटना** स.क्रि. (देश.) 1. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु पर इसलिए बार-बार रगड़ना कि वह दूसरी वस्तु चिकनी और चमकीली हो जाए, रगड़ना, बारीक पीसने के लिए बार-बार रगड़ना जैसे- भांग पीसना, आटा पीसना, चंदन घिसना पुं. घोटने का औजार, वह वस्तु जिससे कुछ घोटा जाए जैसे- भँगघोटना।

**घोटनी स्त्री.** (देश.) वह छोटी वस्तु जिसमें या जिससे कोई वस्तु घोटी जाए।

**घोटवाना** स.क्रि. (देश.) रगड़वाना, घोटना, चिकना करना 2. पालिश करवाना 3. सिर या दाढ़ी आदि के बाल बनवा डालना।

**घोटा** पुं. (देश.) 1. वह वस्तु जिससे घोटने का काम किया जाए 2. रँगरेज का एक औजार जिसे वे रंगे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिए रगड़ते हैं, दुवाली, मोहरा 2. घुटा हुआ चमकीला कपड़ा 4. भांग घोटने का सोटा या डंडा 5. बाँस का चह चोंगा जिससे घोड़ो, बैलों आदि पशुओं को नमक, तेल या और कोई औषध पिलाई जाए 6. नग जड़ियों का एक औजार 7. रगड़ा 8. क्षौर, हजमता।

**घोटाई स्त्री.** (देश.) घोटने का भाव, घोटने की क्रिया।

**घोटाला** पुं. (देश.) घपला, गड़बड़, गोलमाल।

**घोटिका स्त्री.** (तत्.) घोड़ी।

**घोटू** पुं. (देश.) 1. वह जो घोटे, घोटनेवाला 2. घोटने का औजार, घोटा।

**घोठ** पुं. (तद्.) गाँठ, गोष्ठ।

**घोड़** पुं. (तद्.) घोड़ा।

**घोड़ा** पुं. (तद्.) गंधर्व अश्व, बाजि, तुरंग, चार पैरों वाला एक बड़ा शक्तिशाली जानवर जो सवारी के काम आता है टि. इसके पैरों में गोलका (सुम टाप) होते हैं, यह गधे से बड़ा, मजबूत और दौड़ने में बहुत तेज होता है, प्राचीन काल से ही मनुष्य घोड़े से सवारी का काम लेता रहा है, घोड़े की चालों में कदम, दुल्की, पड़िया, रहवाल, लंगूरी आदि हैं, घोड़े की बोली को हिन्हिन्ना कहते हैं, उत्तम मध्यम और कनिष्ठ घोड़ों के प्रकार हैं, इनकी अवस्था का अनुमान इसके दाँतों से किया जाता है, अरब, स्पेन आदि देशों के घोड़े अच्छी जाति के माने जाते हैं, भारत में कच्छ, काठियावाड़ और सिंध (पाकिस्तान) के घोड़े उत्तम नस्ल के माने गए हैं मुहा. घोड़ा छोड़ना- किसी ओर घोड़ा दौड़ना; घोड़ा बेचकर सोना- गहरी नींद सोना।

**घोड़ागाड़ी स्त्री.** (देश.) 1. वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है 2. डाक गाड़ी, मेलकार्ट 3. वह गाड़ी जो डाक के थैले ऐसी जगह पहुँचाती है जहाँ रेल आदि नहीं जाती, बहुधा इस गाड़ी में घोड़े ही जाते हैं।